

20-समयदान ही युग-धर्म

अध्याय 1: दान और उसका औचित्य

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: इस अध्याय के अनुसार पुण्य और पाप क्या हैं? **उत्तर:** अध्याय के अनुसार, "देना" ही पुण्य है और दूसरों के अधिकारों का अपहरण करना या केवल लेना ही पाप है।

प्रश्न 2: दान-पुण्य के प्रतिफल को अध्यात्म की भाषा में क्या कहा जाता है? **उत्तर:** अध्यात्म की भाषा में दान-पुण्य का प्रतिफल स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, वरदान और चमत्कार के रूप में बताया जाता है।

प्रश्न 3: भक्त और भगवान के बीच कैसा संबंध बताया गया है? **उत्तर:** भगवान को भक्तवत्सल कहा गया है, जो समर्पण करने वाले भक्त के हाथों में स्वयं को सौंप देते हैं और उसके इशारे पर नाचते हैं, जैसे मीरा और सूर के साथ हुआ।

प्रश्न 4: महामानवों ने उत्कृष्टता कैसे प्राप्त की? **उत्तर:** सभी महामानवों ने संसार से जो कुछ भी पाया, उसे कई गुना करके वापस देने का व्रत निभाकर ही उत्कृष्टता प्राप्त की।

प्रश्न 5: संसार का शाश्वत नियम क्या है? **उत्तर:** संसार का शाश्वत नियम "अनुदान का प्रतिदान" है। इसका अर्थ है कि जो जितना देता है, वह उसी अनुपात में पाता है।

प्रश्न 6: धनदान के अलावा और कौन सा दान संभव है? **उत्तर:** धनदान के अलावा प्रतिभादान और समयदान भी संभव हैं, जो ईश्वर द्वारा दी गई ऐसी संपदा है जो सभी के पास समान रूप से मौजूद है।

प्रश्न 7: दान शब्द का दुरुपयोग कैसे होता है? **उत्तर:** दान शब्द का दुरुपयोग आयकर से बचने, आलस्य और पाखंड को बढ़ावा देने, मुफ्तखोरी की आदत डालने और यश प्राप्ति के लिए पैसे देने जैसे कार्यों में होता है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, धनिकों का दान उनके संचित पापों का प्रायश्चित्त कैसे है? **उत्तर:** लेखक का मानना है कि धनिकों द्वारा किया गया दान अक्सर उनके द्वारा गलत तरीकों से कमाए गए धन का एक छोटा हिस्सा होता है। जिस प्रकार फोड़े में भरे मवाद को निकालना रोगी के लिए ही भला होता है, उसी प्रकार पाप से संचित धन को दान कर देना धनिकों के लिए एक प्रकार का प्रायश्चित्त है।

प्रश्न 2: दान को पुण्य कब कहा जा सकता है और यह पाप का कारण कब बन सकता है? **उत्तर:** दान को पुण्य तभी कहा जा सकता है जब उसे प्रामाणिक माध्यमों से उच्चस्तरीय सत्प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाए। इसके विपरीत, यदि दान की राशि आलस्य, पाखंड, दुर्व्यसन या अंधविश्वासों को बढ़ाने में लगती है, तो वह पाप का कारण बन सकती है और देने वाले तथा लेने वाले दोनों के लिए संकट खड़ा कर सकती है।

प्रश्न 3: "सादा जीवन-उच्च विचार" की नीति दान के औचित्य से कैसे संबंधित है? **उत्तर:** "सादा जीवन-उच्च

विचार" की नीति अपनाने से व्यक्ति औसत नागरिक की तरह जीवन जीता है और अपनी न्यायपूर्ण कमाई से संतुष्ट रहता है। इससे उसके खर्च कम होते हैं और जो धन बचता है, उसे वह समाज की अव्यवस्थाओं से निपटने और सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने जैसे श्रेष्ठ कार्यों के लिए दान कर सकता है। यही दान का सच्चा औचित्य है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: इस अध्याय में "देने" के दर्शन को सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में सफलता का मूल क्यों बताया गया है? **उत्तर:** अध्याय के अनुसार, "देना" एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। सांसारिक क्षेत्र में, जो व्यक्ति समाज को अपनी प्रतिभा, श्रम और सहयोग देता है, उसे सम्मान और सफलता मिलती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में, अपनी इच्छाओं और सर्वस्व को आराध्य के प्रति समर्पित करना (देना) ही भक्ति का स्वरूप है, जिससे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। इस प्रकार, देने का भाव ही व्यक्ति को भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक उन्नति, दोनों दिलाता है।

प्रश्न 2: दान की पारंपरिक धारणाओं की आलोचना करते हुए लेखक किस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वास्तविक दान क्या होना चाहिए? **उत्तर:** लेखक पारंपरिक धारणाओं जैसे- यश के लिए दान, आयकर बचाने के लिए दान, या अपात्रों को दान की आलोचना करता है क्योंकि ये स्वार्थ या अज्ञान से प्रेरित होते हैं। लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वास्तविक दान केवल धन का नहीं, बल्कि प्रतिभा और समय का है। सच्चा दान वह है जो निस्वार्थ भाव से, विवेक के साथ, समाज में सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन और अवांछनीयताओं को मिटाने के लिए किया जाए। यह दान व्यक्ति के अपने जीवन को "सादा जीवन-उच्च विचार" के सिद्धांत पर ढालने से ही संभव होता है।

अध्याय 2: अवसर प्रमाद बरतने का है नहीं

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक सुसम्पन्न होते हुए भी दुखी क्यों है? **उत्तर:** मनुष्य वासना, तृष्णा और अहंता (लोभ, मोह और अहंकार) के बंधनों में बुरी तरह जकड़ा हुआ है, जिसके कारण वह हर समय चिंताओं और समस्याओं से घिरा रहता है।

प्रश्न 2: मनुष्य की चतुरता और बुद्धिमत्ता को किन दो भागों में बाँटा गया है? **उत्तर:** इन्हें दो भागों में बाँटा गया है: पहला बहिरंग पक्ष, जो किसी भी तरह (नीति या अनिती से) अपना स्वार्थ सिद्ध करता है, और दूसरा अन्तरंग पक्ष, जो मर्यादा, ईमानदारी और जिम्मेदारी को महत्व देता है।

प्रश्न 3: लेखक के अनुसार, मनुष्य जीवन के तीन प्रमुख प्रश्न क्या हैं? **उत्तर:** तीन प्रमुख प्रश्न हैं: (1) सृष्टा ने यह

दुर्लभ जीवन किस उद्देश्य से दिया? (2) प्राप्त साधनों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग क्या हो सकता है? (3) मृत्यु के बाद सृष्टि के दरबार में अपने जीवन का क्या हिसाब देना होगा?

प्रश्न 4: मनुष्य को किन क्षणों में तुरंत निर्णय लेने की आवश्यकता होती है? **उत्तर:** जैसे आग लगने पर, ट्रेन छूटने के समय, या दुर्घटना होने पर तुरंत निर्णय लेना आवश्यक होता है, वैसे ही जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों पर आलस्य नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 5: हनुमान, बुद्ध और विभीषण जैसे महापुरुषों को सुयोग कैसे प्राप्त हुआ? **उत्तर:** उन्होंने सही समय को पहचाना और तत्काल निर्णय लिए। यदि वे निर्णय लेने में देरी करते, तो उन्हें वह गौरव प्राप्त नहीं होता जो उन्हें मिला।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक ने मनुष्य की "उल्टी बुद्धि" की तुलना किन प्राणियों के उदाहरणों से की है और क्यों? **उत्तर:** लेखक ने मनुष्य की "उल्टी बुद्धि" की तुलना जलते दीपक पर झपटते पतंगे, चारे के लालच में फँसती मछली, सूखी हड्डी चबाते कुत्ते और अपनी ही नाभि की कस्तूरी को बाहर खोजते हिरण से की है। ऐसा इसलिए क्योंकि मनुष्य भी इन प्राणियों की तरह क्षणिक लालच या अज्ञान के कारण ऐसे काम करता है जो अंततः उसके लिए आत्मघाती सिद्ध होते हैं।

प्रश्न 2: "बड़प्पन" और "महानता" में क्या अंतर है? समाज को किसका अनुसरण करना चाहिए? **उत्तर:** "बड़प्पन" का संबंध अक्सर बाहरी ठाठ-बाट, धन-संपदा और चालाकी से होता है, जो पानी के बुलबुले की तरह क्षणिक होता है। "महानता" का संबंध आंतरिक गुणों जैसे प्रामाणिकता, प्रखरता और आदर्शवादिता से है, जो स्थायी होती है और दूसरों को प्रेरणा देती है। समाज को बड़प्पन के बजाय महानता का अनुसरण करना चाहिए, भले ही वह कमजोर या पराजित क्यों न दिखे।

प्रश्न 3: वर्तमान समय को एक "असाधारण" समय क्यों कहा गया है, जिसमें तत्काल निर्णय लेना आवश्यक है? **उत्तर:** वर्तमान समय को असाधारण कहा गया है क्योंकि यह एक ऐसा मोड़ है जहाँ एक ओर उत्थान का मार्ग है और दूसरी ओर पतन का। यह एक निर्णायक क्षण है जहाँ मनुष्य को तुरंत सही दिशा का चयन करना होगा। यदि इस अवसर पर प्रमाद या आलस्य किया गया, तो विपरीत दिशा में जाने वाली नौकाओं की तरह यह अवसर उसे नष्ट कर देगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: इस अध्याय में बहिरंग और अन्तरंग पक्षों के बीच का संघर्ष आज के समाज की किन समस्याओं को दर्शाता है? **उत्तर:** यह संघर्ष आज के समाज की सबसे बड़ी समस्या को दर्शाता है, जहाँ नैतिकता पर भौतिक सफलता को प्राथमिकता दी जा रही है। बहिरंग पक्ष की प्रधानता के कारण लोग चालाकी, स्वार्थ और अनीति

से सफलता तो पा लेते हैं, लेकिन इससे समाज में भ्रष्टाचार, अशांति और नैतिक पतन बढ़ रहा है। लोग बाहरी सुंदरता और सफलता से आकर्षित होते हैं और पर्दे के पीछे छिपे चरित्र के दोषों (जैसे एड्स, कैंसर के विषाणु) को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे पूरी मानवता संकट में है।

प्रश्न 2: विवेकवान व्यक्ति के तीन प्रश्नों का आज के मनुष्य के जीवन से क्या संबंध है? इन प्रश्नों की उपेक्षा करने के क्या परिणाम हो रहे हैं? **उत्तर:** विवेकवान व्यक्ति के तीन प्रश्न (जीवन का उद्देश्य, साधनों का उपयोग, मृत्यु के बाद जवाबदेही) जीवन को एक सार्थक दिशा देते हैं। आज का मनुष्य इन प्रश्नों की उपेक्षा कर रहा है और केवल पेट-प्रजनन या भौतिक संग्रह में लगा है। इस उपेक्षा के परिणाम स्वरूप, वह अपनी क्षमताओं का दुरुपयोग कर रहा है, नैतिक रूप से भटक गया है और एक उद्देश्यहीन जीवन जी रहा है। वह मानव से देवता बनने के बजाय चौरासी लाख योनियों के कुचक्र में फँसने और नारकीय दुर्गति की ओर बढ़ रहा है।

अध्याय 3: अभूतपूर्व अवसर जिसे चूका न जाए

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: समर्थ गुरु रामदास ने विवाह मंडप में 'सावधान' शब्द सुनकर क्या किया? **उत्तर:** उन्होंने उस संकेत को गंभीरता से लिया और राष्ट्र उद्धारक बनने के मार्ग पर चल पड़े।

प्रश्न 2: लेखक ने मनुष्य के जीवन को "अलभ्य अवसर" क्यों कहा है? **उत्तर:** क्योंकि यह जीवन किसके पास कितने दिन रहेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। शंकराचार्य और विवेकानंद जैसे महामानव भी भरी जवानी में चले गए, इसलिए इस अवसर का तुरंत सही निर्धारण कर लेना चाहिए।

प्रश्न 3: वर्तमान समय को "युग संधि की बेला" क्यों कहा गया है? **उत्तर:** क्योंकि बीसवीं सदी समाप्त हो रही है और इक्कीसवीं सदी का आरम्भ हो रहा है। यह एक असाधारण अवसर है जब मनुष्य जाति का भाग्य नए सिरे से लिखा जा रहा है।

प्रश्न 4: इतिहास के अभिनव अध्याय में हमारा योगदान कैसा होना चाहिए? **उत्तर:** हमारा योगदान एक छोटे दीपक की तरह होना चाहिए जो अपने सीमित साधनों (तेल-बत्ती) को दाँव पर लगाकर भी अपने प्रभाव क्षेत्र में प्रकाश फैलाता है।

प्रश्न 5: नारद और हनुमान को भगवान का विशेष स्नेह क्यों मिला? **उत्तर:** नारद ने भगवान की भक्ति के प्रचार में स्वयं को समर्पित कर दिया, और हनुमान ने कठिन समय में राम की प्राण-पण से सहायता की, इसलिए वे भगवान के विशेष प्रिय बने।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक ने होली और दिवाली के उदाहरणों का प्रयोग किस बड़े विचार को समझाने के लिए किया है? **उत्तर:** लेखक ने इन त्योहारों का उपयोग यह समझाने के लिए किया है कि जैसे विशेष अवसरों पर हर कोई सक्रिय होकर घर की साफ-सफाई और सजावट में जुट जाता है, उसी प्रकार इस युग परिवर्तन के महान अवसर पर किसी को भी निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए। सभी को अपनी क्षमता के अनुसार इस नव-निर्माण के उत्सव में योगदान देना चाहिए।

प्रश्न 2: "मनुष्य में देवत्व का उदय" से लेखक का क्या तात्पर्य है और इक्कीसवीं सदी से इसका क्या संबंध है? **उत्तर:** "मनुष्य में देवत्व का उदय" से तात्पर्य है कि मनुष्य अपने स्वार्थ और संकीर्णता से ऊपर उठकर उदारता, सेवा और उच्च आदर्शों को अपनाए। लेखक के अनुसार, इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य इसी पर निर्भर करता है। यह एक दैवी इच्छा है कि सड़ी-गली दुनिया को बदलकर मनुष्य में देवत्व को जगाया जाए, और जो इस कार्य में सहायक बनेंगे, वे कृतकृत्य होंगे।

प्रश्न 3: इस अध्याय में "अवसर चूकने" का क्या अर्थ है और इसके क्या परिणाम हो सकते हैं? **उत्तर:** "अवसर चूकने" का अर्थ है युग परिवर्तन के इस निर्णायक क्षण में सही भूमिका का चयन करने में देरी करना या आलस्य करना। इसके परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं, जैसे प्रसव काल में लापरवाही से जच्चा-बच्चा दोनों की मृत्यु हो सकती है। जो इस अवसर को चूक जाएगा, वह इतिहास में एक सार्थक भूमिका निभाने के गौरव से वंचित रह जाएगा और उसे विवश होकर परिस्थितियों का दास बनना पड़ेगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: "इन दिनों मनुष्य जाति का भाग्य नए कागज पर, नई स्याही से, नए सिरे से लिखा जा रहा है।" इस कथन का गहन विश्लेषण करें और बताएं कि यह व्यक्ति को क्या करने के लिए प्रेरित करता है? **उत्तर:** यह एक अलंकारिक कथन है जिसका गहरा अर्थ है कि हम एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़े हैं जहाँ पुराने मूल्य, व्यवस्थाएँ और विचार समाप्त हो रहे हैं और नए युग की नींव रखी जा रही है। "नए कागज" का अर्थ है एक नया युग, "नई स्याही" का अर्थ है नए विचार और सिद्धांत। यह कथन व्यक्ति को एक निष्क्रिय दर्शक बने रहने के बजाय इस लेखन प्रक्रिया में एक सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित करता है। उसे यह तय करना है कि इस नए इतिहास में उसकी भूमिका एक सृजनकर्ता की होगी या एक मूक दर्शक की, क्योंकि एक बार भूमिका तय हो जाने पर उसे अंत तक वही निभानी होगी।

प्रश्न 2: अध्याय में दिए गए शबरी, गिलहरी, नारद और हनुमान के उदाहरणों के माध्यम से लेखक "योगदान" के किस स्वरूप को सबसे महत्वपूर्ण मानता है—मात्रा या भावना? **उत्तर:** लेखक इन उदाहरणों के माध्यम से यह स्थापित करता है कि योगदान की मात्रा से अधिक उसकी भावना और समय की महत्ता होती है। शबरी

और गिलहरी के अनुदान बहुत छोटे थे, लेकिन वे भगवान के प्रति गहरी भावना और समर्पण से युक्त थे, इसलिए वे अमर हो गए। नारद और हनुमान ने अपना सर्वस्व (समय, श्रम, समर्पण) उस समय समर्पित किया जब उसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। अतः, लेखक के अनुसार, सबसे महत्वपूर्ण योगदान वह है जो निस्वार्थ भावना, गहरी श्रद्धा और सही समय पर पूरी लगन के साथ किया जाए, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो।

अध्याय 4: समयदान-महादान

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: दान के साथ कौन सी दो शर्तें पूरी होनी चाहिए? **उत्तर:** दान के साथ उत्कृष्टता और विवेकशीलता की शर्त पूरी होनी चाहिए ताकि वह श्रेयस्कर हो सके।

प्रश्न 2: धन दान को गौण क्यों माना गया है? **उत्तर:** क्योंकि सबके पास इतना धन नहीं होता कि वे कोई महत्वपूर्ण कार्य पूरा कर सकें। साथ ही, धनवान होना भौतिक पुरुषार्थ और सुयोग का प्रतिफल है जो सभी के लिए संभव नहीं है।

प्रश्न 3: लेखक ने किस सम्पदा को सबके लिए सुलभ बताया है? **उत्तर:** लेखक ने "समय" को ऐसी सम्पदा बताया है जो सृष्टा ने सभी को उदारतापूर्वक प्रदान की है और जो सबके लिए सुलभ है।

प्रश्न 4: किसी कार्य के लिए समय का उपयोग कब संभव हो पाता है? **उत्तर:** समय का उदार उपयोग तभी संभव होता है जब उस कार्य में गहरी रुचि हो। बिना मन के कोई भी काम या तो शुरू नहीं होता या अधूरा रह जाता है।

प्रश्न 5: श्रम से निकले पसीने के कणों की तुलना किससे की गई है? **उत्तर:** श्रम से निकले पसीने के कणों (स्वेदकणों) की तुलना मणि-मुक्तकों (मोतियों) से की गई है।

प्रश्न 6: भारत की पुरातन गरिमा का मूल आधार क्या था? **उत्तर:** भारत की पुरातन गरिमा का मूल आधार साधु-ब्राह्मणों और वानप्रस्थ पुरोहितों का वह वर्ग था जो न्यूनतम निर्वाह पर रहता था और अपना शेष सारा समय लोक-मंगल के कार्यों में लगाता था।

प्रश्न 7: भारतीय धर्मतंत्र का एक अनिवार्य पक्ष क्या रहा है? **उत्तर:** भारतीय धर्मतंत्र का एक अनिवार्य पक्ष "वानप्रस्थ" रहा है, जिसमें जीवन की आधी अवधि सांसारिक कार्यों में लगाने के बाद शेष आधी अवधि लोकमंगल के लिए समर्पित की जाती थी।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, असली और नकली धर्मोपदेशकों में क्या अंतर है? इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? **उत्तर:** असली धर्मोपदेशक वे देव-मानव थे जो अपना समय और जीवन लोक-मंगल में लगाते थे, जिससे समाज का उत्कर्ष होता था। नकली धर्मोपदेशक, जिनकी संख्या आज लाखों में है, धर्म की आड़ में केवल सम्मान और अनुदान बटोरते हैं। इसका प्रभाव यह हो रहा है कि इतने धर्म सेवकों के होते हुए भी देश का पतन हो रहा है, क्योंकि जिन्हें समाज का भार उठाना चाहिए था, वे स्वयं समाज पर भार बन गए हैं।

प्रश्न 2: "समयदान" वास्तव में कब बन पड़ता है? केवल खाली समय देना ही समयदान क्यों नहीं है? **उत्तर:** समयदान वास्तव में तभी बन पड़ता है, जब व्यक्ति के भीतर से आदर्शों पर चलने के लिए एक बेचैन करने वाली टीस या लगन उठती हो। केवल खाली समय देना समयदान नहीं है क्योंकि बिना गहरी रुचि और लगन के दिए गए समय से किया गया कार्य अधूरा और निष्प्रभावी होता है। सच्चा समयदानी अपने लक्ष्य के प्रति इतना समर्पित होता है कि कोई भी प्रलोभन या बाधा उसे रोक नहीं पाती।

प्रश्न 3: "पाखण्डी से बढ़कर अभागा और कोई नहीं।" इस कथन की व्याख्या अध्याय के संदर्भ में करें। **उत्तर:** इस कथन का अर्थ है कि जो व्यक्ति आदर्शों का केवल दिखावा करता है (बहुरूपियापन) और स्वार्थ सिद्धि के लिए छल का सहारा लेता है, वह अंत में अकेला रह जाता है। अध्याय के संदर्भ में, जो लोग समयदान का नाटक करते हैं लेकिन भीतर से स्वार्थी होते हैं, उनकी असलियत एक दिन सामने आ जाती है। तब उनके निकटवर्ती और सहयोगी भी उनका साथ छोड़ देते हैं, और बुरे समय में उनका साथ देने वाला कोई नहीं बचता, इसीलिए वे सबसे बड़े अभागे हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: इस अध्याय में "वानप्रस्थ" परंपरा को सतयुगी वातावरण का प्रमुख कारण क्यों बताया गया है? आज के युग में इसे पुनर्जीवित करने की क्या चुनौतियाँ और संभावनाएँ हैं? **उत्तर:** वानप्रस्थ को सतयुगी वातावरण का प्रमुख कारण इसलिए बताया गया है क्योंकि इस परंपरा के तहत समाज के अनुभवी और ज्ञानी लोग (गृहस्थ) अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होकर अपना पूरा समय और ऊर्जा लोक-मंगल के लिए समर्पित कर देते थे। इससे समाज को निस्वार्थ सेवा और मार्गदर्शन मिलता था, जिससे आदर्शवादिता और उत्कृष्टता बनी रहती थी। आज इसे पुनर्जीवित करने में मुख्य चुनौतियाँ हैं: भौतिकवाद की अधिकता, परिवारों का बड़ा और खर्चीला होना, और सेवानिवृत्ति के बाद भी धन संग्रह की लालसा। फिर भी, संभावनाएँ हैं। यदि लोगों को समयदान के महत्व का एहसास कराया जाए और "सादा जीवन-उच्च विचार" की प्रेरणा दी जाए, तो आज भी लोग अपने जीवन का एक हिस्सा समाज सेवा के लिए समर्पित कर सकते हैं।

प्रश्न 2: अध्याय के अंत में लेखक "आदर्शवादी घटनाक्रम" की सफलता का श्रेय किन्हें देता है और क्यों? यह

आज के सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए क्या संदेश देता है? उत्तर: लेखक आदर्शवादी आंदोलनों और अभियानों की सफलता का श्रेय केवल उन लोगों को देता है जिन्होंने उत्कृष्टता को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया और आदर्शों के लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया। ये वे सच्चे "समयदानी" हैं जिनकी लगन एक टीस बनकर उन्हें हर पल प्रेरित करती है। वे केवल समय नहीं देते, बल्कि अपना कौशल, साधन और सर्वस्व समर्पित करते हैं। यह आज के सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए एक गहरा संदेश है कि सामाजिक परिवर्तन केवल योजनाओं या भाषणों से नहीं होता। इसके लिए कथनी और करनी में एकता, गहरी प्रामाणिकता और निस्वार्थ समर्पण की आवश्यकता होती है। जब तक कार्यकर्ता स्वयं उन आदर्शों पर नहीं चलेंगे जिनका वे प्रचार करते हैं, तब तक वे समाज में स्थायी परिवर्तन नहीं ला सकते।

अध्याय 5: दृष्टिकोण बदले तो परिवर्तन में देर न लगे सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार वर्तमान समय में सबसे बड़ा संकट या दुर्भिक्ष क्या है? उत्तर: लेखक के अनुसार, वर्तमान समय में सबसे बड़ा संकट "आस्था संकट" है, जिसके कारण लोगों का दृष्टिकोण विकृत हो गया है और वे सही-गलत का भेद नहीं कर पा रहे हैं।

प्रश्न 2: लोगों के दृष्टिकोण में कैसी विकृति आ गई है? उत्तर: दृष्टिकोण में ऐसी विकृति आ गई है कि लोगों को उल्टा-सीधा और सीधा-उल्टा दिखाई देता है, जैसे कौरवों को राजमहल में जल में थल और थल में जल दिख रहा था।

प्रश्न 3: आज के समय में लोगों का अपनाया जा रहा चिन्तन और व्यवहार कैसा है? उत्तर: आज हर कोई आपाधापी में है और जिस भी तरह से हो सके, अधिक से अधिक बटोरने में लगा है। उद्दण्डता को ही समर्थता माना जा रहा है।

प्रश्न 4: विज्ञान और बुद्धिवाद बढ़ने के बावजूद समाज में कौन सी समस्याएँ बढ़ रही हैं? उत्तर: विज्ञान और बुद्धिवाद के दुरुपयोग से बीमारी, गरीबी, बेकारी और प्रदूषण जैसी समस्याएँ लगातार बढ़ रही हैं।

प्रश्न 5: लेखक के अनुसार सभी सामाजिक विकृतियों की जड़ क्या है? उत्तर: सभी सामाजिक विकृतियों की जड़ विकृत चिन्तन है। जिस प्रकार पाचन तंत्र खराब होने पर अनेक रोग होते हैं, उसी प्रकार भ्रष्ट चिन्तन से दुष्ट आचरण पैदा होता है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक ने सामाजिक सुधार के सतही उपायों की तुलना किससे की है और स्थायी समाधान क्या बताया है? उत्तर: लेखक ने सतही उपायों की तुलना चेचक की फुंसियों पर मरहम लगाने या नाली के ऊपर चूना

छिड़कने से की है, जो केवल अस्थायी राहत देते हैं। स्थायी समाधान के लिए मूल कारण, यानी विकृत चिन्तन (रक्त विकार) को ठीक करना आवश्यक है। इसके लिए विचारक्रांति का तूफानी सरंजाम जुटाने की आवश्यकता है।

प्रश्न 2: "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" इस मान्यता को आज के व्यक्तिवादी युग में स्थापित करने का क्या अर्थ है? **उत्तर:** आज का युग व्यक्तिवादी और संकीर्ण स्वार्थपरता का है। ऐसे में इस मान्यता को स्थापित करने का अर्थ है कि व्यक्ति को अपने निजी लोभ, मोह और अहंकार को नियंत्रित करना सीखना होगा। उसे यह समझना होगा कि उसकी प्रगति और शांति समाज के साथ जुड़ी हुई है, और उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता देनी होगी।

प्रश्न 3: विभिन्न प्रतिभाओं (मनीषी, वक्ता, धनिक, नेतृत्वकर्ता) को युग-धर्म निभाने के लिए क्या योगदान देना चाहिए? **उत्तर:**

- **मनीषियों** को अपनी लेखनी और वाणी को सशक्त अस्त्र बनाना चाहिए।
- **वक्ताओं** को अपनी ओजस्वी वाणी से लोगों को अनौचित्य छोड़ने के लिए बाधित करना चाहिए।
- **धनिकों** को अपने अनावश्यक संग्रह को युग-धर्म के लिए विसर्जित कर देना चाहिए, क्योंकि यही उनके लिए सच्चा प्रायश्चित्त है।
- **नेतृत्वकर्ताओं** को अपनी प्रतिभा का उपयोग लोकमानस का सही मार्गदर्शन करने में करना चाहिए, जैसे बुद्ध और गाँधी ने किया।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: विचारक्रांति को लेखक ने इतना महत्वपूर्ण क्यों माना है? इतिहास से उदाहरण देते हुए समझाएँ कि कैसे विचारों ने दुनिया को बदला है। **उत्तर:** लेखक विचारक्रांति को इसलिए महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि मनुष्य के सभी क्रियाकलाप उसकी विचारधारा और मान्यताओं से ही निर्देशित होते हैं; शरीर केवल मन का वाहन है। दृष्टिकोण बदलने पर व्यवहार और प्रचलन अपने आप बदल जाते हैं। इतिहास में प्रजातंत्र और साम्यवाद जैसी विचारधाराओं ने संसार के दो-तिहाई मस्तिष्कों को प्रभावित किया है। इसी प्रकार, विचारक्रांति ने ही राजशाही, सामन्तशाही और दास-प्रथा जैसी गहरी जड़ें जमा चुकी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ दिया है। यही कारण है कि स्थायी परिवर्तन के लिए विचारक्रांति ही एकमात्र उपाय है।

प्रश्न 2: अध्याय के अनुसार, आस्था संकट के मूल कारण क्या हैं और यह व्यक्ति और समाज को कैसे पतन की ओर ले जा रहा है? **उत्तर:** आस्था संकट का मूल कारण विकृत दृष्टिकोण है, जिसके तहत व्यक्ति सही और गलत का विवेक खो बैठा है। इसका कारण है स्वार्थपरता, आपाधापी, और अहंकार को ही सफलता मानना। यह व्यक्ति को आत्म-प्रताड़ना, असंतोष, निराशा और उद्विग्नता की ओर ले जा रहा है। सामाजिक स्तर पर, इसी

विकृत चिन्तन के कारण गरीबी, बीमारी, प्रदूषण और नशेबाजी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, जो धीमी गति से सामूहिक आत्महत्या के समान है। इस प्रकार, आस्था संकट व्यक्ति को भीतर से और समाज को बाहर से खोखला कर रहा है।

अध्याय 6: प्रभावोत्पादक समर्थता

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: लोग अक्सर यह शिकायत क्यों करते हैं कि उनके उपदेशों का दूसरों पर प्रभाव नहीं पड़ता? **उत्तर:** क्योंकि लोग उपदेश सुनने से ज्यादा यह देखते हैं कि उपदेशक स्वयं अपने जीवन में उन बातों का कितना पालन करता है।

प्रश्न 2: उपदेशक और श्रोता की तुलना किससे की गई है? **उत्तर:** उनकी तुलना ऊँचे मंच पर बैठे वक्ता और नीचे बैठे श्रोता से की गई है। यदि वक्ता (उपदेशक) स्वयं आचरण में ऊँचा नहीं होगा, तो उसकी बात श्रोताओं तक प्रभावशाली ढंग से नहीं पहुँचेगी।

प्रश्न 3: बुरे लोग भी अपना समूह बनाने में सफल क्यों हो जाते हैं? **उत्तर:** क्योंकि उनके सूत्र संचालकों की कथनी और करनी में एकता होती है, भले ही वह बुरे स्तर की क्यों न हो।

प्रश्न 4: उपदेश में शक्ति कब उत्पन्न होती है? **उत्तर:** उपदेश में शक्ति तब उत्पन्न होती है जब कथनी और करनी दोनों का संयोग होता है, जैसे बिजली के दो तार मिलने पर करंट चालू होता है।

प्रश्न 5: प्रभावी समयदान के लिए किन तीन चीजों का समन्वय आवश्यक है? **उत्तर:** प्रभावी समयदान के लिए समय, श्रम और संकल्प का त्रिविध समन्वय आवश्यक है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, एक उपदेशक के प्रति लोग क्या संदेह करते हैं जब उसकी कथनी और करनी में अंतर होता है? **उत्तर:** लोग दो बातें सोचते हैं: (1) या तो उपदेशक की बातें अव्यावहारिक हैं और सुधार संभव नहीं है, या (2) उपदेशक एक ठग है जो दूसरों से सम्मान चाहता है लेकिन स्वयं घटियापन अपनाकर स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। इसी संदेह के कारण आदर्शवादी उपदेशों से लोगों का विश्वास उठ जाता है।

प्रश्न 2: "विचारक्रान्ति वकीलों जैसी दलाली देने से सम्भव नहीं हो सकती।" इस कथन का क्या आशय है? **उत्तर:** इस कथन का आशय है कि केवल तर्कों या भाषणों से समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी दुष्प्रवृत्तियों को नहीं बदला जा सकता। विचारक्रान्ति के लिए केवल भ्रान्तियों का निवारण काफी नहीं है, बल्कि इसके पीछे काम कर रही व्यक्तिगत स्वार्थपरता और अहमन्यता पर भी अंकुश लगाना आवश्यक है, जो केवल आचरण की प्रामाणिकता से ही संभव है।

प्रश्न 3: महाक्रान्ति के दो चरण कौन-कौन से बताए गए हैं? उत्तर:

1. पहला चरण (विचारक्रान्ति): लोकमानस को भ्रान्तियों से उबारना और विवेकशीलता अपनाने के लिए सहमत करना।

2. दूसरा चरण (क्रियात्मक परिवर्तन): दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन, जिसे "प्रतिभा परिष्कार" भी कहा गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: इस अध्याय में "व्यक्तित्व की गरिमा" को सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली उपकरण क्यों बताया गया है? उत्तर: "व्यक्तित्व की गरिमा" को सबसे शक्तिशाली उपकरण इसलिए बताया गया है क्योंकि लोग सिद्धांतों से अधिक व्यक्ति के आचरण से प्रभावित होते हैं। जब एक सुधारक अपने उपदेशों को स्वयं दृढ़तापूर्वक आचरण में उतारता है, तो उसका व्यक्तित्व प्रामाणिक और प्रखर हो जाता है। यही प्रामाणिकता लोगों में विश्वास जगाती है और उन्हें अनुकरण के लिए प्रेरित करती है। नानक और कबीर जैसे संतों ने अपने प्रामाणिक व्यक्तित्व के बल पर ही असंख्य अनुयायी बनाए। बिना व्यक्तित्व की गरिमा के उपदेश खोखले और प्रभावहीन रह जाते हैं।

प्रश्न 2: अध्याय में दहेज-विरोधी आंदोलन के उदाहरण के माध्यम से सामाजिक सुधारों की विफलता का मूल कारण क्या बताया गया है? उत्तर: इस उदाहरण के माध्यम से विफलता का मूल कारण सुधारकों का दोहरा चरित्र या "मुखौटे बदलना" बताया गया है। लोग बेटी के विवाह में तो दहेज-विरोधी बन जाते हैं, लेकिन बेटे के विवाह के समय प्रकट या गुप्त रूप से लाभ उठाने से नहीं चूकते। कथनी और करनी के इसी अंतर के कारण यह महत्वपूर्ण आंदोलन केवल एक उपहास का विषय बनकर रह गया है। यह दर्शाता है कि किसी भी सामाजिक सुधार की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके पैरोकार अपने सिद्धांतों के प्रति कितने ईमानदार और दृढ़ हैं।

अध्याय 7: प्रामाणिकता और प्रखरता ही सर्वत्र अभीष्ट

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: मनुष्य को बाँधने वाली तीन प्रमुख जंजीरें कौन सी हैं? उत्तर: ये तीन जंजीरें हैं- लोभ (तृष्णा), मोह (वासना), और अहंकार (अहंता)।

प्रश्न 2: लोभ या तृष्णा व्यक्ति से क्या करवाती है? उत्तर: यह व्यक्ति में धन बटोरने की ललक पैदा करती है, जिसके लिए वह अनाचार तक करता है और दुर्व्यसनों का शिकार हो जाता है।

प्रश्न 3: औसत नागरिक स्तर का जीवन जीने के लिए लेखक क्या सुझाव देते हैं? **उत्तर:** लेखक के अनुसार, औसत नागरिक स्तर का निर्वाह कुछ ही घंटों के परिश्रम से हो सकता है और शेष समय का सदुपयोग पुण्य-परमार्थ में किया जा सकता है।

प्रश्न 4: अहंकार का व्यक्ति के सामाजिक संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है? **उत्तर:** अहंकारी व्यक्ति दूसरों की कमियाँ बताकर स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करता है, जिससे लोग उससे दूर हो जाते हैं और वह किसी का सच्चा स्नेह या सम्मान नहीं पा पाता।

प्रश्न 5: वीर और महावीर में क्या अंतर बताया गया है? **उत्तर:** जो दूसरों के अवगुणों पर जीत पा लेता है, वह वीर कहलाता है। लेकिन जिसने अपने आपको (अपने अवगुणों को) जीत लिया, वह महावीर है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, पारिवारिक जीवन को लोकसेवा में बाधक बनने से कैसे रोका जा सकता है? **उत्तर:** इसके लिए दो बातें आवश्यक हैं: (1) परिवार को इतना बड़ा और भारी न बनाया जाए कि उसका भार उठाते-उठाते ही जीवन समाप्त हो जाए। (2) परिवार को स्वावलम्बी और सुसंस्कारी बनाने तक ही लक्ष्य सीमित रखा जाए, उस पर अमीर बनने या बड़प्पन थोपने का बोझ न डाला जाए। यदि पति-पत्नी उच्च उद्देश्यों में एक-दूसरे के सहयोगी बनें तो विवाह बंधन नहीं बनता।

प्रश्न 2: आज के समय में आदर्शवादी आकांक्षाओं में गिरावट का मुख्य कारण क्या है? **उत्तर:** मुख्य कारण यह है कि ऐसे प्राणवान लोग नहीं मिलते जो अपनी जीवनचर्या से दूसरों को प्रकाश दे सकें। जो उपदेशक हैं भी, उनकी कथनी और करनी में भारी अंतर है, जिससे वे समाज में गंदगी बिखेरते हैं और अश्रद्धा का वातावरण बनाते हैं।

प्रश्न 3: लेखक के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण सेवा क्या है और क्यों? **उत्तर:** सबसे महत्वपूर्ण सेवा है व्यक्ति के चिन्तन को उत्कृष्ट बनाना ताकि वह अपनी समस्याओं का हल स्वयं खोज सके और स्वावलम्बी बन सके। ऐसा इसलिए क्योंकि दूसरों के अनुदानों पर आश्रित रहने वाला व्यक्ति आंतरिक रूप से दीन-हीन हो जाता है, जबकि स्वावलंबन से ही स्थायी समाधान संभव है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: "खरे सोने की ही पूरी कीमत उठती है।" इस कथन के माध्यम से लेखक इक्कीसवीं सदी के नवनिर्माण के लिए कैसे व्यक्तियों की आवश्यकता पर बल दे रहा है? **उत्तर:** इस कथन के माध्यम से लेखक यह समझा रहे हैं कि इक्कीसवीं सदी के बड़े और महत्वपूर्ण कार्यों को करने के लिए केवल खरे सोने जैसे प्रामाणिक और प्रखर चरित्र वाले व्यक्तियों की आवश्यकता है। जैसे खोटा सिक्का हर जगह दुत्कारा जाता है, उसी प्रकार दोहरे चरित्र वाले व्यक्ति इस महान कार्य में सफल नहीं हो सकते। नवनिर्माण के लिए ऐसे मनोबल और चरित्रबल के धनी

लोग चाहिए जो चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की हर कसौटी पर खरे उतरें। प्रतिभा परिष्कार का अभियान ऐसे ही खरे व्यक्ति तैयार करने के लिए चलाया जा रहा है।

प्रश्न 2: लोभ, मोह और अहंकार—इन तीन भव-बंधनों का "समयदान" के आदर्श से क्या सीधा टकराव है? विस्तार से समझाएं। **उत्तर:** इन तीनों का समयदान के आदर्श से सीधा टकराव है:

- **लोभ (तृष्णा):** यह व्यक्ति को अधिक से अधिक धन संचय के लिए प्रेरित करता है, जिससे उसका सारा समय और ऊर्जा इसी में खप जाती है और वह परमार्थ के लिए समय नहीं निकाल पाता।

- **मोह (वासना):** यह व्यक्ति को एक बड़े और खर्चीले परिवार में उलझा देता है, जिसकी जिम्मेदारियों का बोझ ही इतना होता है कि उसके पास लोकसेवा के लिए सोचने या करने का अवसर ही नहीं बचता।

- **अहंकार:** यह व्यक्ति को दूसरों से जुड़ने और अपनत्व स्थापित करने से रोकता है। एक समयदानी को नम्रतापूर्वक लोगों से जुड़ना होता है, जबकि अहंकारी व्यक्ति अपने बड़प्पन के प्रदर्शन में लगा रहता है, जिससे वह किसी का सहयोग या सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता और अकेला रह जाता है।

इस प्रकार, ये तीनों बंधन व्यक्ति को स्वार्थ की संकीर्ण दुनिया में कैद कर देते हैं, जबकि समयदान निस्वार्थ सेवा और समर्पण की मांग करता है।

अध्याय 8: समय का एक बड़ा अंश, नवसृजन में लगे सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार मनुष्य की महत्वपूर्ण सामर्थ्य प्रायः किस स्थिति में रहती है? **उत्तर:** लेखक के अनुसार, मनुष्य की महत्वपूर्ण सामर्थ्य प्रायः प्रसुप्त (सोई हुई) स्थिति में पड़ी रहती हैं और केवल निर्वाह क्रम चलाने जितना ही हिस्सा क्रियाशील रहता है।

प्रश्न 2: आज का युग-धर्म क्या बताया गया है? **उत्तर:** आज का युग-धर्म है—जन-जागरण के लिए प्रचण्ड पुरुषार्थ में जुट पड़ना।

प्रश्न 3: विचार परिष्कार के लिए किन माध्यमों का उपयोग करने की बात कही गई है? **उत्तर:** विचार परिष्कार के लिए लेखनी और वाणी के दृश्य और श्रव्य स्तर के सभी माध्यमों, जैसे युग-साहित्य, दीप यज्ञ, गोष्ठियाँ और टेप रिकार्डर आदि का उपयोग करने की बात कही गई है।

प्रश्न 4: युग निर्माण की जन-जागरण योजना के दो विधेयात्मक (सृजनात्मक) कार्यक्रम कौन से हैं? **उत्तर:** दो विधेयात्मक कार्यक्रम हैं: (1) शिक्षा का विस्तार (हर शिक्षित द्वारा न्यूनतम दो अशिक्षितों को शिक्षित बनाना) और (2) नारी जागरण।

प्रश्न 5: दो प्रमुख दुष्प्रवृत्तियाँ कौन सी हैं जिनके उन्मूलन पर जोर दिया गया है? **उत्तर:** दो प्रमुख दुष्प्रवृत्तियाँ हैं—नशा-निवारण और विवाहों में होने वाला अपव्यय (जैसे दहेज, जेवर, धूमधाम)।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक ने देव-दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन के उदाहरण का प्रयोग किस बड़े विचार को समझाने के लिए किया है? **उत्तर:** इस उदाहरण का प्रयोग यह समझाने के लिए किया गया है कि जैसे समुद्र में छिपी विपुल संपदा को बाहर निकालने के लिए देव-दानवों को मिलकर विशेष प्रयत्न करना पड़ा, उसी प्रकार मनुष्य के भीतर छिपी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाने और युग परिवर्तन जैसे महान कार्य को करने के लिए **विशिष्ट जनों को विशेष और संगठित प्रयत्न करने होंगे।**

प्रश्न 2: इक्कीसवीं सदी को "नारी प्रधान" क्यों कहा गया है और इसके लिए क्या प्रयत्न करने आवश्यक हैं? **उत्तर:** इक्कीसवीं सदी को नारी प्रधान इसलिए कहा गया है क्योंकि उस युग में नारी की भूमिका हर क्षेत्र में पुरुष से भी बढ़-चढ़कर होगी। इसके लिए यह प्रयत्न करना आवश्यक है कि उसे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और तेजस्विता की दृष्टि से उपयुक्त स्तर तक पहुँचाया जाए। उसे गृहकार्यों के चौबीसों घंटे के बंधन से थोड़ा अवकाश और प्रजनन के भार से मुक्ति देनी होगी ताकि वह प्रगति के लिए अवसर पा सके।

प्रश्न 3: गाँधीजी के खादी आंदोलन और नमक सत्याग्रह का उल्लेख युग निर्माण योजना के संदर्भ में क्यों किया गया है? **उत्तर:** इसका उल्लेख यह बताने के लिए किया गया है कि जैसे गाँधीजी ने दो छोटे लेकिन प्रतीकात्मक उपक्रमों से एक महान आंदोलन शुरू किया जो अंततः राष्ट्र को स्वतंत्रता दिलाने में समर्थ हुआ, उसी प्रकार युग निर्माण योजना ने भी **नशा-निवारण और शादियों को बिना खर्च का बनाने जैसे विशिष्ट कार्यों को हाथ में लेकर एक बड़े सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत की है।**

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: "गिराने में जितनी शक्ति लगी है, उसकी तुलना में बनाने में कहीं अधिक कौशल, समय, श्रम और साधन चाहिए।" इस कथन का नवसृजन के संदर्भ में विश्लेषण करें। **उत्तर:** इस कथन का गहरा अर्थ है कि समाज में दुष्प्रवृत्तियों को स्थापित करना या विनाश करना आसान हो सकता है, लेकिन एक आदर्श समाज का पुनर्निर्माण करना एक अत्यंत कठिन और जटिल प्रक्रिया है। नवसृजन के लिए केवल विनाशकारी शक्तियों का विरोध करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके लिए **अत्यधिक कौशल (योजना), धैर्य (समय), समर्पण (श्रम) और संसाधनों (साधन) की आवश्यकता होती है।** यह कथन समयदानी कार्यकर्ताओं को यह संदेश देता है कि उन्हें एक लंबी और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना होगा।

प्रश्न 2: अध्याय के अनुसार, युग चेतना से अनुप्राणित प्रतिभाओं की नवसृजन में क्या भूमिका होगी और उन्हें आवश्यक साधन कहाँ से प्राप्त होंगे? **उत्तर:** युग चेतना से अनुप्राणित प्रतिभाओं की भूमिका अग्रदूतों की होगी। उन्हें ही इस नवसृजन का शुभारंभ करना होगा। वे केवल उपदेश नहीं देंगे, बल्कि शिक्षा, नारी जागरण, नशा-मुक्ति और विवाह सुधार जैसे रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेंगे। आवश्यक साधन

आसमान से नहीं आएंगे, बल्कि उन्हें स्वयं अपने समयदान और अंशदान से इन साधनों को जुटाना होगा। महाकाल ने हर प्रतिभावान व्यक्ति से केवल समयदान की याचना की है, और इसी निस्वार्थ योगदान से नवसृजन के लिए आवश्यक सभी संसाधन उत्पन्न होंगे।

अध्याय 9: प्राणवान प्रतिभाएँ यह करेंगी

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: महाकाल ने इन दिनों क्या निश्चय किया है? **उत्तर:** महाकाल ने इन दिनों परिष्कृत प्रतिभाओं का उत्पादन और अभिवर्धन करने का निश्चय किया है, ताकि वे आदर्शों के लिए साहस प्रदर्शित कर सकें।

प्रश्न 2: विचारक्रांति के लिए साहित्य-सृजन के अलावा और क्या आवश्यक है? **उत्तर:** साहित्य-सृजन के अलावा अशिक्षित जनता के लिए दृश्य और श्रव्य माध्यमों (जैसे संगीत, अभिनय, स्लाइड प्रोजेक्टर, फिल्मों) का उपयोग करना आवश्यक है।

प्रश्न 3: प्रचार के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरण क्या है? **उत्तर:** प्रचार के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरण प्रशिक्षण है, ताकि लोगों की आदतों और परंपराओं में वास्तविक परिवर्तन लाया जा सके।

प्रश्न 4: युग सृजन के लिए हर व्यक्ति से किस दान की अपेक्षा की गई है? **उत्तर:** हर भावनाशील व्यक्ति से समयदान और अंशदान की अपेक्षा की गई है।

प्रश्न 5: वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित करने से क्या लाभ होगा? **उत्तर:** वानप्रस्थ परम्परा पुनर्जीवित होने से सतयुग की वापसी के लिए समर्थ और अनुभवी प्रतिभाएँ कार्यक्षेत्र में उतर सकेंगी।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्या बदलाव आवश्यक हैं और क्यों? **उत्तर:** लेखक के अनुसार, वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बदलकर एक ऐसी नई शिक्षण परिपाटी बनानी होगी जो लोगों की मूढ़ मान्यताओं को जड़ से समाप्त कर सके और उनके व्यवहार में स्थायी परिवर्तन ला सके। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि समाज के हर क्षेत्र (शरीर, मन, व्यवहार, उपार्जन, उपयोग) में महत्वपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है, जो केवल बौद्धिक ज्ञान देने से नहीं, बल्कि आदतों और परंपराएँ बदलने वाले व्यावहारिक प्रशिक्षण से ही संभव है।

प्रश्न 2: अंशदान के लिए लेखक ने क्या व्यावहारिक सुझाव दिए हैं? **उत्तर:** लेखक ने दो व्यावहारिक सुझाव दिए हैं:

1. **ज्ञानघट योजना:** आरम्भिक दिनों के लिए प्रतिदिन दस पैसे निकालना।
2. **नियमित अंशदान:** कार्य विस्तार के लिए महीने में उन्तीस दिन की कमाई से गुजारा करना और एक दिन

की आजीविका नियमित रूप से नवनिर्माण के लिए निकालना। जिनके पास अधिक संचय है, उन्हें प्रायश्चित स्वरूप उसे विसर्जित कर देना चाहिए।

प्रश्न 3: इस अध्याय में "ब्रह्मकर्म" किसे कहा गया है और सतयुग से इसका क्या संबंध है? **उत्तर:** इस अध्याय में समयदान और अंशदान को "दो ब्रह्मकर्म" कहा गया है। सतयुग से इसका यह संबंध है कि इन्हीं दो निस्वार्थ कर्मों की कृपा से सतयुग की कालावधि में सर्वत्र आनंद और मंगल का वातावरण था। इन्हीं दो कदमों को उठाकर "मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण" का परम लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: "प्रचार" और "प्रशिक्षण" में क्या मूलभूत अंतर है? लेखक प्रशिक्षण को एक "बड़ा काम" क्यों मानता है? **उत्तर:** प्रचार का मुख्य उद्देश्य विचारों और सूचनाओं को लोगों तक पहुँचाना है, जो कि परिवर्तन का पहला चरण है। प्रशिक्षण इससे कहीं आगे की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि लोगों की गहरी जमी हुई मान्यताओं, आदतों और परंपराओं को बदलना और उन्हें नए व्यवहार के लिए तैयार करना है। लेखक इसे "बड़ा काम" इसलिए मानता है क्योंकि यह प्रक्रिया "ब्रेनवाशिंग" से भी आगे जाकर एक "कायाकल्प" के स्तर की है। लोगों को अपनी पुरानी और आरामदायक आदतों को छोड़ने के लिए सहमत करना अत्यंत कठिन होता है, और इसके लिए एक ऐसी समर्थ शिक्षण परिपाटी की आवश्यकता होती है जो बौद्धिक समझ के साथ-साथ व्यावहारिक अभ्यास भी करा सके।

प्रश्न 2: अध्याय में प्रतिभाओं के परिष्कार और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का जो वर्णन है, वह किस प्रकार एक सुनियोजित एवं चरणबद्ध महाक्रांति की रूपरेखा प्रस्तुत करता है? **उत्तर:** यह अध्याय एक महाक्रांति की बहुत ही सुनियोजित और चरणबद्ध रूपरेखा प्रस्तुत करता है:

- **पहला चरण (मानव संसाधन विकास):** महाकाल द्वारा परिष्कृत प्रतिभाओं का उत्पादन करना, जो इस क्रांति के अग्रदूत बनेंगे।
- **दूसरा चरण (विचारों का प्रसार):** इन प्रतिभाओं द्वारा साहित्य, वाणी, संगीत, अभिनय जैसे सभी दृश्य-श्रव्य माध्यमों का उपयोग कर युग चेतना का व्यापक प्रचार करना।
- **तीसरा चरण (कौशल और व्यवहार परिवर्तन):** प्रचार के बाद एक सशक्त प्रशिक्षण व्यवस्था स्थापित करना, जो लोगों की आदतों और मान्यताओं को बदलकर उन्हें नए युग के अनुरूप ढालेगी।
- **चौथा चरण (संसाधन प्रबंधन):** इस महायज्ञ को चलाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति से समयदान और अंशदान के माध्यम से संसाधन जुटाना, जिसमें वानप्रस्थ जैसी परंपराओं को भी पुनर्जीवित करना शामिल है। इस प्रकार, यह केवल भावनात्मक आह्वान नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित योजना है जिसमें मानव संसाधन, संचार, प्रशिक्षण और वित्त पोषण जैसे सभी आवश्यक तत्व शामिल हैं।

अध्याय 10: अग्रदूत बनें, अवसर न चूकें

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

प्रश्न 1: युग परिवर्तन में मनुष्य के पराक्रम के साथ और किसका सहयोग रहेगा? **उत्तर:** मनुष्य के पराक्रम के साथ-साथ **दैवी सत्ता का सहयोग** भी रहेगा, जो प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदलेगी।

प्रश्न 2: युग परिवर्तन के दो प्रधान कार्य कौन से हैं? **उत्तर:** दो प्रधान कार्य हैं—**दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्ति का संवर्धन**।

प्रश्न 3: कितने सृजन शिल्पी बनाने का लक्ष्य रखा गया है? **उत्तर:** **एक लाख सृजन शिल्पी** बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

प्रश्न 4: युग संधि पर्व पर शान्तिकुञ्ज में कौन सा अनुष्ठान आरम्भ किया गया है? **उत्तर:** युग संधि पर्व पर एक सुनियोजित **"धर्म यज्ञ"** आरम्भ किया गया है।

प्रश्न 5: इस धर्म यज्ञ की पूर्णाहुति कब और कितने साधकों द्वारा सम्पन्न होगी? **उत्तर:** इसकी पूर्णाहुति इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में **एक करोड़ साधकों** द्वारा सम्पन्न होगी।

प्रश्न 6: लेखक ने परिजनों से "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" वाले उपक्रम का ध्यान रखने के लिए क्यों कहा है? **उत्तर:** ताकि पूर्णाहुति के वर्ष तक एक करोड़ साधकों की संख्या पूरी होने में कमी न पड़ने पाए।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

प्रश्न 1: लेखक ने अपने स्थूल शरीर को छोड़ने और सूक्ष्म शरीर का आश्रय लेने की बात क्यों कही है? **उत्तर:** लेखक का मानना है कि उन पर जिम्मेदारियाँ बहुत अधिक बढ़ गई हैं और युग परिवर्तन के लिए जूझने और सृजन के दुहरे मोर्चे पर जितना कार्य करना है, वह वयोवृद्ध स्थूल शरीर की सीमित क्षमता से संभव नहीं है। **सूक्ष्म शरीर से हजार गुना अधिक काम हो सकता है**, इसलिए वे व्यापक क्रिया-कलापों के निर्वाह के लिए सूक्ष्म शरीर का आश्रय अनिवार्य बताते हैं।

प्रश्न 2: "संरक्षक" किन्हें गिना जाएगा और उनका स्थान अधिक प्रमाणित क्यों माना जाएगा? **उत्तर:** जिनके तत्त्वावधान में **पच्चीस भागीदार** होंगे, उन्हें "संरक्षक" गिना जाएगा। उनका स्थान अधिक प्रमाणित इसलिए माना जाएगा क्योंकि यह उनकी नेतृत्व क्षमता, संगठन कौशल और मिशन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

प्रश्न 3: जो लोग इस "अलभ्य अवसर" से चूक जाएंगे, उन्हें कैसा पश्चाताप होगा? **उत्तर:** उन्हें यह पश्चाताप कचोटता रहेगा कि **एक ऐतिहासिक सुयोग का अवसर आया था और उन्होंने उसकी उपेक्षा कर उसे आलस्य-प्रमाद में गँवा दिया**। वे इतिहास निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बनने के गौरव से वंचित रह जाएंगे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

प्रश्न 1: इस अध्याय में वर्णित "एक करोड़ साधकों की पूर्णाहुति" की योजना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान न होकर एक विराट सामाजिक आंदोलन की तैयारी कैसे है? **उत्तर:** यह योजना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है क्योंकि इसका उद्देश्य केवल पूजा-पाठ नहीं है। यह एक विराट सामाजिक आंदोलन की तैयारी है जिसके कई पक्ष हैं:

- **संगठनात्मक शक्ति:** एक करोड़ समर्पित कार्यकर्ताओं का एक विशाल नेटवर्क तैयार करना, जो ज़मीनी स्तर पर परिवर्तन लाएंगे।
- **संकल्प और प्रतिबद्धता:** पूर्णाहुति के समय ये सभी साधक केवल यज्ञ में भाग नहीं लेंगे, बल्कि भावी क्रियाकलापों का संकल्प लेकर लौटेंगे। यह उन्हें भविष्य के कार्यों के लिए प्रतिबद्ध करेगा।
- **प्रेरणा का स्रोत:** यह आयोजन १९५८ के सहस्र कुण्डी यज्ञ की तरह एक बड़े धक्के का काम करेगा, जिससे नए युग निर्माण के पच्चीस गुने अधिक प्रयास शुरू होंगे और जन-समुदाय में नव-चेतना का संचार होगा। इस प्रकार, यह यज्ञ एक प्रतीक है जिसके माध्यम से एक विशाल, अनुशासित और संकल्पित कार्यबल को नव-निर्माण के लिए तैयार और प्रेरित किया जा रहा है।

प्रश्न 2: लेखक अपने न रहने की आशंकाओं का समाधान कैसे करते हैं और यह अनुयायियों के लिए क्या संदेश देता है? **उत्तर:** लेखक अपने न रहने की आशंकाओं का समाधान यह कहकर करते हैं कि उनके द्वारा किए गए कार्यों में ९९ प्रतिशत दैवी चेतना का सहयोग रहा है और उनका शरीर तो केवल १ प्रतिशत का माध्यम रहा है। वे विश्वास दिलाते हैं कि उनके जाने के बाद भी वह प्रेरक सत्ता अपना काम करती रहेगी और व्यवस्था पहले से सैकड़ों गुना बेहतर तरीके से चलेगी। यह अनुयायियों के लिए एक गहरा संदेश है कि आंदोलन किसी व्यक्ति पर निर्भर नहीं है, बल्कि एक उच्चतर दैवी शक्ति द्वारा संचालित है। इससे उन्हें प्रेरणा मिलती है कि उन्हें व्यक्ति-पूजा में नहीं पड़ना चाहिए, बल्कि मिशन के सिद्धांतों और उस अदृश्य सत्ता पर विश्वास रखकर अपने कर्तव्यों का पालन करते रहना चाहिए। यह आंदोलन को आत्मनिर्भर और स्थायी बनाता है।

शब्द/शब्द समुच्चय - परिभाषा

- **दान** - इसका अर्थ है "देना"। यह ईश्वर द्वारा दी गई क्षमताओं को जाग्रत-विकसित करना और उससे दूसरों को भी लाभ पहुँचाना है।
- **पुण्य** - दान अर्थात् "देना" ही पुण्य है।
- **पाप** - लेना, बटोरना या दूसरों के अधिकारों का अपहरण करना ही पाप है।
- **नर्क** - पाप की प्रतिक्रिया का अलंकारिक प्रतिपादन ही नर्क है।
- **स्वर्गीय परिस्थितियाँ** - ये पुण्य-परमार्थ और सेवा के आधार पर बनती हैं।
- **भक्ति** - इसका एक ही स्वरूप है—अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को आराध्य के साथ घुला-मिला देना।
- **वास्तविक दान** - यह प्रतिभा का दान है, क्योंकि धन और साधन उसी से उपजते हैं। यह समयदान से ही संभव है।
- **अनुदान का प्रतिदान** - यह संसार का शाश्वत नियम है, जिसका अर्थ है कि जो जितना देता है, वह उसी अनुपात में पाता है।
- **बलिदान** - पूजा-पाठ में एक विधि पशुवध की भी सम्मिलित थी, जिसे बलिदान कहा जाता था।
- **पुण्यमय दान** - दान को पुण्य तब कहा जा सकता है जब उसे प्रामाणिक माध्यमों से उच्चस्तरीय सत्प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किया जाए।
- **धनिकों का दान** - यह उनके संचित पापों का प्रायश्चित्त है।
- **सादा जीवन-उच्च विचार** - यह एक नीति है जिसमें व्यक्ति औसत नागरिक स्तर का जीवन जीता है और न्यायोचित कमाई पर संतोष करता है।
- **वासना, तृष्णा और अहंता** - ये मनुष्य को बाँधने वाले निविड़ भव-बंधन हैं। इन्हें ही लोभ, मोह और अहंकार भी कहा गया है।
- **मनुष्य का अन्तरंग पक्ष** - यह मनुष्य का वह पक्ष है जिसमें मर्यादा, समझदारी, ईमानदारी और जिम्मेदारी को प्रमुखता मिलती है।
- **बड़प्पन** - यह पानी के बुलबुले की तरह है जो उबलता है और थोड़ी उछल-कूद दिखाकर अदृश्य हो जाता है (यह बाहरी ठाठ-बाट से संबंधित है)।
- **महानता** - यह समुद्र में दीप्तिमान प्रकाश स्तंभ की तरह है (यह आंतरिक गुणों और आदर्शवादिता से संबंधित है)।
- **मनुष्य जीवन का अगला स्तर** - यह देवता है।
- **युग सन्धि की बेला** - यह एक असाधारण अवसर है जब बीसवीं सदी विदा हो रही है और इक्कीसवीं सदी का

प्रभाव अरुणोदय की तरह हो रहा है।

- **इक्कीसवीं सदी (उज्ज्वल भविष्य)** - यह मनुष्य में देवत्व का उदय एवं प्रतिभा परिष्कार का महाअभियान है। इसे विचार क्रान्ति की लाल मशाल का प्रज्वलन भी कहते हैं।
- **समय** - यह वह सम्पदा है जो हर किसी को सृष्टि ने उदारतापूर्वक प्रदान की है।
- **समयदान** - यह तभी बन पड़ता है जब अन्तराल की गहराई से आदर्शों पर चलने के लिए बेचैन करने वाली टीस उठती हो।
- **प्रभावी समयदान** - यह वह है जिसमें समय, श्रम और संकल्प का त्रिविध समन्वय हुआ हो।
- **समयदानी** - ये वे लोग हैं जिन्होंने उत्कृष्टता को अपनी जीवनचर्या का अविच्छिन्न अंग बनाया और आदर्शों को स्थापित करने में अपना सर्वस्व दाँव पर लगाया।
- **सतयुग** - यह वह समय था जब साधु-ब्राह्मण और वानप्रस्थ पुरोहित न्यूनतम निर्वाह पर रहकर अपना सारा समय लोक-मंगल में लगाते थे, जिससे सर्वतोमुखी प्रगति का वातावरण बना।
- **वानप्रस्थ** - यह भारतीय धर्मतंत्र का एक अनिवार्य पक्ष रहा है, जिसमें जीवन की आधी अवधि सांसारिक कार्यों में लगाने के बाद शेष आधी अवधि लोकमंगल के लिए समर्पित की जाती थी।
- **आस्था संकट** - यह वर्तमान समय का घोर दुर्भिक्ष है, जिसमें दृष्टिकोण में विकृति आ गई है और लोगों को उल्टा-सीधा और सीधा-उल्टा दिखाई देता है।
- **सामाजिक विकृतियों की उद्गम स्थली** - यह भ्रष्ट चिन्तन है, जिससे दुष्ट आचरण पैदा होता है।
- **युग-धर्म** - आज का युग-धर्म जन-जागरण के लिए प्रचण्ड पुरुषार्थ में जुट पड़ना है।
- **विचारक्रान्ति** - इसका अर्थ है लोकमानस को भ्रान्तियों से उबारना और परिष्कार कर विवेकशीलता अपनाने के लिए सहमत करना।
- **प्रतिभा परिष्कार** - यह महाक्रान्ति का दूसरा चरण है, जिसे दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन भी कहते हैं।
- **वीर** - वह जो दूसरों के अवगुणों पर जीत पा लेता है।
- **महावीर** - वह जिसने अपने आपको (अपने अवगुणों को) जीत लिया।
- **दो ब्रह्मकर्म** - समयदान और अंशदान, जिनकी अनुकम्पा से सतयुग में आनंद-मंगल था।
- **धर्म यज्ञ** - यह युग सन्धि पर्व पर शान्तिकुञ्ज में आरम्भ किया गया एक सुनियोजित अनुष्ठान है, जिसका उद्देश्य प्रतिभाओं को परिष्कृत करना, सूक्ष्म वातावरण को अनुकूल बनाना और सृजनात्मक प्रवृत्तियों को गति देना है।